60 Haj Karne Wala Haji (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 204
Weekly Booklet : 204

60 ह़ज करने वाला ह़ाजी

सफ़ह़ात 21

- त़वाफ़ करने वाले की निराली दुआ 05
- मायूस न होने वाला ह़ाजी 11
- दुआ क़बूल न होने की ह़िक्मतें 11
- सफ़रे ह़ज के बेहतरीन हम सफ़र 15

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

60 ह़ज करने वाला ह़ाजी

येह रिसाला **(60 ह़ज करने वाला ह़ाजी)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hind.printing92@gmail.com**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़मून "आ़शिकाने रसूल की 130 ह़िकायात" सफ़ह़ा 84 ता 107 से लिया गया है।

60 ह़ज करने वाला ह़ाजी

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़ह़ात का रिसाला : **"60 ह़ज करने वाला ह़ाजी"** पढ़ या सुन ले उसे हर साल मक़बूल ह़ज नसीब फ़रमा और उसे सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत और जन्नतुल बक़ीअ़ में ख़ैर से दफ़्न होना नसीब फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊ़फ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जब बुलाया आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल फ़रज अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी किताब उ़यूनुल ह़िकायात में तह़रीर करते हैं : एक परहेज़गार शख़्स का बयान है : "मैं मुसल्सल तीन साल से **ह़ज** की दुआ़ कर रहा था लेकिन मेरी ह़सरत पूरी न हुई, चौथे साल **ह़ज का मौसिमे बहार** था और दिल आरज़ूए ह़रम में बे क़रार था। एक रात जब मैं सोया

तो मेरी सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी मैं ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से शरफ़याब हुवा । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **''तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना ।''** मेरी आंख खुली तो दिल ख़ुशी से झूम रहा था, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह मीठी मीठी आवाज़ कानों में रस घोल रही थी, **''तुम इस साल ह़ज के लिये चले जाना ।''** बारगाहे नबुव्वत से **ह़ज** की इजाज़त मिल चुकी थी, मैं बहुत शादां व फ़रह़ां था । अचानक याद आया कि मेरे पास ज़ादे राह (या'नी सफ़र का ख़र्च) तो है नहीं ! इस ख़याल के आते ही मैं ग़मगीन हो गया । दूसरी शब महबूबे रब, शहनशाहे अ़रब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में फिर ज़ियारत हुई, लेकिन मैं अपनी ग़ुर्बत का ज़िक्र न कर सका । इसी त़रह़ तीसरी रात भी ख़्वाब में बारगाहे रिसालत से हुक्म हुवा : **''तुम इस साल ह़ज को चले जाना ।''** मैं ने सोचा अगर मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चौथी बार ख़्वाब में तशरीफ़ लाए तो मैं अपनी माली ह़ालत के **मुतअ़ल्लिक़** अ़र्ज़ कर दूंगा ।

आह ! पल्ले ज़र नहीं रख़्ते सफ़र सरवर नहीं तुम बुला लो तुम बुलाने पर हो क़ादिर या नबी

चौथी रात फिर सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे ग़रीब ख़ाने में जल्वागरी फ़रमाई और इर्शाद फ़रमाया : **''तुम इस साल ह़ज को चले जाना ।''** मैं ने दस्तबस्ता अ़र्ज़ की : ''मेरे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे पास अख़राजात नहीं हैं ।'' इर्शाद फ़रमाया : ''तुम अपने मकान में फ़ुलां जगह खोदो वहां तुम्हारे दादा की ज़िरह मौजूद होगी ।'' इतना फ़रमा कर सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए । सुब्ह़ जब मेरी आंख खुली तो मैं बहुत ख़ुश था । नमाज़े फ़ज्र के बा'द आप

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बताई हुई जगह खोदी तो वहां वाक़ेई एक **क़ीमती ज़िरह** मौजूद थी वोह बिल्कुल साफ़ सुथरी थी गोया उसे किसी ने इस्ति'माल ही न किया हो ! मैं ने उसे चार हज़ार दीनार में बेचा और **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! शहनशाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे इनायत से अस्बाबे **ह़ज** का ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गया ।

(उ़यूनुल ह़िकायात, स. 326 मुलख़्ख़सन)

जब बुलाया आक़ा ने ख़ुद ही इन्तिज़ाम हो गए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हम ने तेरी बात सुन ली है

ह़ज़रते अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने **ह़ज** की सआ़दत ह़ासिल की, का'बए मुशर्रफ़ा का त़वाफ़ किया, **ह़जरे अस्वद** का बोसा लिया, दो रक्अ़त नमाज़े त़वाफ़ पढ़ी और का'बा शरीफ़ की दीवार के साथ बैठ कर **रोने** लगा और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** ! मैं ने तेरे पाक घर के गिर्द न जाने कितने ही चक्कर लगाए मगर मैं नहीं जानता कि क़बूल हुए या नहीं !" फिर मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हो गई, मैं ने एक ग़ैबी आवाज़ सुनी : "ऐ अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ ! हम ने तेरी बात सुन ली है, क्या तू अपने घर में सिर्फ़ उसी को नहीं बुलाता जिस से तू मह़ब्बत करता है !" (الروض الفائق ص ۵۹) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बुलाते हैं उसी को जिस की बिगड़ी येह बनाते हैं
कमर बन्धना दियारे त़यबा को खुलना है क़िस्मत का

(ज़ौक़े ना'त स. 37)

सब्र करते तो क़दमों से चश्मा जारी हो जाता

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन हुनैफ़ फ़रमाते हैं : ''मैं **ह़ज** के इरादे से चला, बग़्दाद पहुंचने तक ह़ालत येह थी कि लगातार चालीस दिन तक कुछ न खाया था। सख़्त प्यास की ह़ालत में जब एक कुंवें पर गया तो वहां एक **हिरन** पानी पी रहा था, मुझे देखते ही हिरन भाग खड़ा हुवा, जब मैं ने कुंवें में झांका तो पानी बहुत नीचे था और इसे बिग़ैर डोल के निकाला नहीं जा सकता था।'' मैं येह कहते हुए चल दिया : ''मेरे मालिको मौला ! मेरा मरतबा इस **हिरन** के बराबर भी नहीं !'' तो मुझे पीछे से आवाज़ आई : ''हम ने तुझे आज़माया था लेकिन तू ने सब्र न किया, अब वापस जा और पानी पी ले।'' जब मैं गया तो कुंवां ऊपर तक पानी से भरा हुवा था, मैं ने ख़ूब प्यास बुझाई और अपना मश्कीज़ा भी भर लिया तो ग़ैब से एक आवाज़ सुनी : ''हिरन तो **मश्कीज़े** के बिग़ैर आया था लेकिन तुम मश्कीज़े के साथ आए हो।'' मैं रास्ते भर उसी मश्कीज़े से पानी पीता और वुज़ू करता रहा मगर पानी ख़त्म न हुवा। फिर जब **ह़ज** से वापसी हुई और जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो वहां ह़ज़रते जुनैद बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तशरीफ़ फ़रमा थे, उन्हों ने मुझे देखते ही इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम लम्ह़ा भर भी सब्र कर लेते तो तुम्हारे क़दमों से चश्मा जारी हो जाता।'' (الروض الفائق، ص103 ملتقطا)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

उन के त़ालिब ने जो चाहा पा लिया उन के साइल ने जो मांगा मिल गया

(ज़ौक़े ना'त स. 34)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

एक त़वाफ़ करने वाले की निराली दुआ़

ह़ज़रते क़ासिम बिन उ़समान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ जो कि साहि़बे इ़ल्मो फ़ज़्ल और मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे, फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को देखा कि दौराने त़वाफ़ सिर्फ़ येही दुआ़ किये जा रहा था : اَللّٰھُمَّ قَضَیْتَ حَاجَۃَ الْمُحْتَاجِیْنَ وَحَاجَتِیْ لَمْ تَقْضِ या'नी "ऐ **अल्लाह** पाक ! तू ने सब ह़ाजतमन्दों की ह़ाजत पूरी फ़रमा दी और मेरी ह़ाजत पूरी नहीं हुई ।" मैं ने उस से जब इस **निराली दुआ़** की तकरार के बारे में इस्तिफ़्सार किया तो बोला : हम **सात अफ़राद** जिहाद में गए, ग़ैर मुस्लिमों ने हमें गिरिफ़्तार कर लिया, जब ब इरादए क़त्ल मैदान में लाए, मैं ने यकायक ऊपर सर उठाया तो क्या देखता हूं कि आस्मान में **सात दरवाज़े** खुले हैं और हर दरवाज़े पर एक **हूर** खड़ी है, जैसे ही हमारे एक रफ़ीक़ को शहीद किया गया, मैं ने देखा कि एक **हूर** हाथ में रूमाल लिये उस शहीद की रूह़ लेने के लिये ज़मीन पर उतर पड़ी, इसी त़रह़ मेरे छे रुफ़क़ा शहीद किये गए और सब की रूहें लेने एक एक **हूर** उतरती रही, जब मेरी बारी आई तो एक दरबारी ने अपनी ख़िदमत के लिये मुझे बादशाह से मांग लिया और मैं शहादत की सआ़दत से मह़रूम रह गया । मैं ने **एक हूर** को कहते सुना : "ऐ मह़रूम ! आख़िर इस सआ़दत से तू क्यूं मह़रूम रहा ?" फिर आस्मान के सातों दरवाज़े बन्द हो गए । तो ऐ भाई ! मुझे अपनी मह़रूमी पर सख़्त अफ़्सोस है । काश ! मुझे भी शहादत की सआ़दत इनायत हो जाती येही वोह ह़ाजत है जिस का आप ने दुआ़ में सुना । ह़ज़रते **क़ासिम** बिन उ़समान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मेरे नज़्दीक उन सातों ख़ुश नसीबों में सब से अफ़्ज़ल **येही सातवां** है जो क़त्ल से बच गया, इस ने अपनी आंखों से वोह रूह़ परवर मन्ज़र देखा जो दूसरों ने नहीं

देखा फिर येह ज़िन्दा रहा और इन्तिहाई ज़ौक़ो शौक़ से नेकियां करता रहा। (المستطرف، 1/249 مفہوما) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मालो दौलत की दुआ़ हम न ख़ुदा करते हैं हम तो मरने की मदीने में दुआ़ करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 293)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अल्लाह पाक की ख़ुफ़्या तदबीर

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाहुर्रह़मान** के भरोसे पर तीन मुसलमान बिग़ैर ज़ादे राह **ह़ज** के लिये रवाना हुए। दौराने सफ़र उन्हों ने ईसाइयों की एक बस्ती में क़ियाम किया, इन में से एक की नज़र एक ख़ूबसूरत नसरानी (क्रिस्चैन) औ़रत पर पड़ी तो उस पर उस का दिल आ गया। वोह "आ़शिक़" ह़ीले बहाने से उस बस्ती में रुक गया और **दोनों ह़ाजी** आगे रवाना हो गए, अब उस आ़शिक़ ने अपने दिल की बात उस औ़रत के वालिद से की, उस ने कहा : "इस का मह्र तुम नहीं दे सकोगे।" पूछा : "क्या मह्र है?" जवाब मिला : "ईसाई (क्रिस्चैन) हो जाओ।" उस बद क़िस्मत ने ईसाइय्यत इख़्तियार कर के उस औ़रत से निकाह़ कर लिया और दो बच्चे भी पैदा हुए। आख़िरश वोह मर गया। उस के दोनों रुफ़क़ा ह़ाजी किसी सफ़र में दोबारा उस बस्ती से गुज़रे तो तमाम ह़ालात से बा ख़बर हुए, उन्हें सख़्त अफ़्सोस हुवा, जब वोह नसरानियों (या'नी ईसाइयों) के क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़रे तो उस (आ़शिक़े नाशाद) की क़ब्र पर एक औ़रत और दो बच्चों को रोते पाया, वोह दोनों ह़ाजी भी (**अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर याद कर के) रोने लगे, औ़रत ने पूछा :

"आप लोग क्यूं रो रहे हैं ?" उन्हों ने मरने वाले की मुसलमान होने की ह़ालत में नमाज़ व इ़बादत और ज़ोहदो तक़्वा वग़ैरा का तज़किरा किया। जब औ़रत ने येह सुना तो उस का दिल **इस्लाम** की त़रफ़ माइल हो गया और वोह अपने दोनों बच्चों समेत **मुसलमान** हो गई। (الروض الفائق، ص16 ملخصا)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! कैसा दिल हिला देने वाला मुआ़मला है कि राहे ह़रम का नेक परहेज़गार मुसाफ़िर यकायक इ़श्क़े मजाज़ी के चक्कर में फंस कर दिल के साथ साथ दीन भी दे बैठा और मुख़्तसर सा वक़्त रंगरेलियां मना कर मौत के रास्ते अन्धेरी क़ब्र की सीढ़ी उतर गया! इस ह़िकायत से दर्से इ़ब्रत लेते हुए हम सभी को **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते और ख़ातिमा बिल ख़ैर की दुआ़ करते रहना चाहिये कि न जाने हमारे साथ क्या मुआ़मला हो! मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से जारी कर्दा सनसनी ख़ेज़ V.C.D या ऑडियो कैसेट "**अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर" ख़रीद कर ज़रूर मुलाह़ज़ा कीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ आप ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप उठेंगे।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह म़हल अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ऐ काश! मैं भी रोने वालों में से होता

दुआ़ए अ़रफ़ात में **ह़ाजियों** की अश्कबारी और आहो ज़ारी जब जारी हुई तो ह़ज़रते **बक्र** رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाने लगे : "ऐ काश! मैं भी इन रोने

वाले ह़ाजियों में से होता।" और ह़ज़रते **मुत़र्रिफ़** رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने ख़ौफ़े ख़ुदा से मग़लूब हो कर बत़ौरे आ़जिज़ी अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** करीम ! मेरी (ना फ़रमानियों की) वज्ह से इन ह़ाजियों को रद न फ़रमाना। (الروض الفائق ص،59 ملخصا) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.105)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों की मग़्फ़िरत हो गई

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने **33 ह़ज** अदा करने की सआ़दत पाई, अपने आख़िरी ह़ज में मैदाने अ़रफ़ात के अन्दर मुनाजात करते हुए अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** करीम ! तू जानता है कि मैं ने इसी **अ़रफ़ात** में **33** बार वुक़ूफ़ किया, एक मरतबा अपनी त़रफ़ से, और एक एक बार अपने मां और बाप की जानिब से **ह़ज** से मुशर्रफ़ हुवा। या रब्बे करीम ! मैं तुझे गवाह बनाता हूं कि मैं ने बाक़ी **30 ह़ज** उस शख़्स को हिबा (या'नी तोह़्फ़े में) कर दिये जो यहां **अ़रफ़ात** में ठहरा लेकिन उस का वुक़ूफ़े अ़रफ़ा क़बूल ना किया गया।" जब आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अ़रफ़ात से **मुज़्दलिफ़ा** पहुंचे तो ख़्वाब में निदा दी गई : "ऐ इब्ने मुन्कदिर ! क्या तू उस पर करम करता है जिस ने करम पैदा किया ? क्या तू उस पर सख़ावत करता है जिस ने सख़ावत पैदा फ़रमाई ? तेरा रब तुझ से फ़रमाता है : मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं ने वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करने वालों को अ़रफ़ात पैदा करने से दो हज़ार साल पहले ही बख़्श दिया था।" (الروض الفائق، ص60)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ग़मे ह़यात अभी राह़तों में ढल जाएं तेरी अ़त़ा का इशारा जो हो गया या रब्ब

(वसाइले बख़्शिश, स. 76)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

आक़ा के नाम का ह़ज करने वाले पर करम बालाए करम

ह़ज़रते अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से **कई ह़ज** किये, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे ख़्वाब में मक्के मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ इब्ने मुवफ़्फ़िक़ ! क्या तुम ने मेरी त़रफ़ से **ह़ज** किये ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । फ़रमाया : "तुम ने मेरी त़रफ़ से तल्बिया कहा ?" मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । फ़रमाया : "मैं क़ियामत के दिन तुम्हें इन का बदला दूंगा और मैं मह़शर में तुम्हारा हाथ पकड़ कर तुम्हें जन्नत में दाख़िल करूंगा जब कि लोग अभी ह़िसाब की सख़्ती में होंगे ।" (لبابُ الاحیاء، ص83) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा है पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

(वसाइले बख़्शिश, स. 372)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

60 ह़ज करने वाला ह़ाजी

ह़ज़रते अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ का येह **साठवां ह़ज** था, ह़रमे मोह़तरम में ह़ाज़िर थे उन के ज़ेह्न में यकायक ख़याल आया कि कब तक **ह़ज** के

लिये हर साल वीरानों और जंगलों की ख़ाक छानोगे ! इतने में नींद का ग़लबा हुवा, सो गए और ग़ैबी आवाज़ सुनी : "उस के लिये ख़ुशख़बरी है जिसे उस के मौला करीम ने दोस्त रखा और अपने घर बुला कर बुलन्द रुत्बे से सरफ़राज़ फ़रमाया।" (روض الریاحین، ص107 ملخصا)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़ो'फ़ माना मगर येह ज़ालिम दिल उन के रस्ते में तो थका न करे!

(ह़दाइक़े बख़्शिश स. 142)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रुख़्सत की इजाज़त के मुन्तज़िर जवान को बिशारत

ह़ज़रते जुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने का'बए मुशर्रफ़ा के पास एक जवान को देखा जो मुसल्सल **नमाज़** पढ़े जा रहा था और रुकने का नाम ही न लेता था। मौक़अ़ मिलने पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने उस से फ़रमाया : क्या बात है कि वापस जाने के बजाए मुसल्सल नमाज़ें पढ़े जा रहे हो ! कहने लगा : अपनी मर्ज़ी से कैसे जाऊं ? रुख़्सत की इजाज़त का इन्तिज़ार है ! ह़ज़रते जुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अभी हम बातें ही कर रहे थे कि उस जवान के ऊपर एक रुक़्आ़ गिरा, उस में लिखा था : "येह ख़त **ख़ुदाए अ़ज़ीज़ो ग़फ़्फ़ार** की जानिब से इस के शुक्र गुज़ार व मुख़्लिस बन्दे के लिये है, वापस जा तेरे अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हैं।" (روض الریاحین، ص108 ملخصا) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स.105)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मायूस न होने वाला हाजी

हज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक आबिद कहते हैं : मैं मुतवातिर कई साल तक **हज** की सआदते उज़्मा से सरफ़राज़ होता रहा और हर साल एक दरवेश को का'बए मुअज़्ज़मा का दरवाज़ा पकड़े देखा। जब वोह "لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ" कहता तो ग़ैब से आवाज़ सुनाई देती : "لَا لَبَّيْكَ" मैं ने **चौदहवें साल** उस शख़्स से पूछा : ऐ दरवेश तू बहरा तो नहीं ? उस ने जवाब दिया : "मैं सब कुछ सुन रहा हूं।" मैं ने कहा : फिर येह तकलीफ़ क्यूं उठाता है ? उस ने कहा : या शैख़ ! मैं ह़ल्फ़िया बयान करता हूं कि अगर बजाए 14 साल के चौदह हज़ार साल मेरी उ़म्र हो और बजाए साल भर के, हर रोज़ हज़ार बार येह जवाब "لَا لَبَّيْكَ" सुनाई दे तो फिर भी इस दरवाज़े से सर न उठाऊंगा। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि अभी हम मसरूफ़े गुफ़्त्गू थे कि अचानक आस्मान से एक कागज़ उस के सीने पर गिरा, उस ने वोह कागज़ मेरी त़रफ़ बढ़ाया, मैं ने पढ़ा तो उस में लिखा था : "ऐ मालिक बिन दीनार ! तू मेरे बन्दे को मुझ से जुदा करता है कि मैं ने इस के **कई साल के हज** क़बूल नहीं किये, ऐसा नहीं बल्कि इस मुद्दत में आने वाले तमाम हाजियों के हज भी इसी की पुकार की बरकत से क़बूल किये हैं ताकि कोई मेरी बारगाह से मह़रूम न जाए।"

दुआ़ क़बूल न होने की ह़िक्मतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से हमें येह भी मदनी फूल मिले कि क़बूलिय्यते दुआ़ में ख़्वाह कितनी ही ताख़ीर हो दिलबर्दाश्ता नहीं होना चाहिये, हम ताख़ीर की मस्लिह़तें नहीं जानते, यक़ीनन क़बूलिय्यते दुआ़ में ताख़ीर बल्कि सिरे से दुआ़ की क़बूलिय्यत का इज़्हार न होना भी हमारे ह़क़ में मुफ़ीद होता है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे

गिरामी रईसुल मुतकल्लिमीन **ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : ह़िक्मते इलाही कि कभी तू बराहे नादानी कोई चीज़ त़लब करता है और (वोह करीम) बराहे मेहरबानी तेरी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता क्यूं कि तू जो मांग रहा होता है वोह अगर अ़त़ा कर दिया जाए तो तुझे नुक़्सान पहुंचे। मसलन तू **दौलत** मांगे और तुझे मिल जाए तो **ईमान** ख़त़रे में पड़ जाए, या तू **सिह़्ह़त** मांगे और उस का मिलना तेरी **आख़िरत** के लिये नुक़्सान देह हो इस लिये वोह तेरी दुआ़ क़बूल नहीं फ़रमाता। पारह 2 सूरतुल बक़रह आयत नम्बर 216 में इर्शाद होता है :

﴿وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْــٴًـا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

येह क्यूं कहूं मुझ को येह अ़त़ा हो येह अ़त़ा हो वोह दो कि हमेशा मेरे घर भर का भला हो

(ज़ौक़े ना'त स. 208)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला !

दुआ़ क़बूल हो या न हो मांगने में कोताही नहीं करनी चाहिये अपने परवर दगार को पुकारते रहना भी बहुत बड़ी सआ़दत और ह़क़ीक़त में इ़बादत है। इस ज़िम्न में मज़ीद एक **ह़िकायत** मुलाह़ज़ा हो : एक ज़ईफ़ुल उ़म्र बुज़ुर्ग एक नौजवान के साथ **ह़ज** करने गए जूं ही एह़राम बांध कर कहा : لَبَّيْك (या'नी में तेरी बारगाह में ह़ाज़िर हूं) ग़ैब से आवाज़ आई : لَالَبَّيْك (या'नी तेरी ह़ाज़िरी क़बूल नहीं) नौजवान ह़ाजी ने उन से कहा : क्या आप ने येह जवाब सुना ? **बूढ़े ह़ाजी** ने फ़रमाया : जी हां, मैं तो **70** साल से येह जवाब सुन रहा हूं ! मैं हर बार अ़र्ज़ करता हूं لَبَّيْك और जवाब आता है لَالَبَّيْك, **नौजवान** ने कहा : फिर आप क्यूं आते, सफ़र की तकालीफ़ उठाते और

ख़ुद को थकाते हैं ? **बूढ़े ह़ाजी** साहिब रो कर कहने लगे : **फिर मैं किस के दरवाज़े पर जाऊं ?** मुझे ख़्वाह रद किया जाए या क़बूल, मैं ने तो बस यहीं आना है, इस दर के सिवा मेरी कहीं पनाह नहीं । ग़ैब से आवाज़ आई : "जाओ ! तुम्हारी सारी ह़ाज़िरियां क़बूल हो गईं ।"

(तफ़्सीरे रूहुल बयान, प. 29 नूह़, तह़तल आयह, 10 : 10/176)

वोह सुनें या न सुनें उन की बहर ह़ाल ख़ुशी दर्दे दिल हम तो कहे जाएंगे اِنْ شَآءَاللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ और एक आ'राबी

ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने सख़्त गर्मियों के मौसिम में दौराने सफ़रे ह़ज मक्का शरीफ़ से मदीना शरीफ़ जाते हुए राह में पड़ाव किया, नाश्ते के वक़्त ख़ादिम से कहा : किसी मेहमान को ढूंड लाओ ! वोह गया और उस ने पहाड़ की त़रफ़ एक **आ'राबी** (या'नी देहाती, बद्दू) को सोया हुवा देख कर पाऊं से ठोकर मार कर जगाया और कहा : तुम को गवर्नर **ह़ज्जाज** बिन युसूफ़ ने त़लब फ़रमाया है । वोह उठ कर ह़ज्जाज के पास आया । ह़ज्जाज ने कहा : "मेरे साथ खाना खा लो ।" उस ने कहा : मैं आप से बेहतर **करीम** की दा'वत क़बूल कर चुका हूं ।" पूछा : "वोह कौन है ?" जवाब दिया : "**अल्लाह** पाक कि उस ने मुझे **रोज़ा** रखने की दा'वत दी और मैं ने रख लिया । ह़ज्जाज बोला : ऐसी शदीद गर्मी में रोज़ा ? जवाब दिया : हां, क़ियामत की सख़्त तरीन गर्मी से बचने के लिये । ह़ज्जाज ने कहा : अच्छा तो अब कल रोज़ा न रखना और मेरे साथ खाना खा लेना । कहा : क्या आप **कल** तक मेरे जीने की ज़मानत दे सकते हैं ? बोला : "येह तो मेरे बस में नहीं । कहा : तअ़ज्जुब है कि आप आख़िरत के मुआ़मले में बेबस होने के बा वुजूद दुन्या त़लबी में लगे हुए हैं ! ह़ज्जाज ने कहा : येह खाना निहायत

उ़म्दा है। जवाब दिया : इसे न आप ने उ़म्दा किया है न ही त़ब्बाख़ (या'नी बावर्ची) ने, बल्कि इसे सिह्ह़त व आ़फ़िय्यत बख़्श होने की ख़ूबी ने उ़म्दा किया है या'नी जो मरीज़ हो उस को लज़्ज़त नहीं आती मगर सिह्ह़त मन्द को येह ख़ूब भाता है और सिह्ह़तो आ़फ़िय्यत देने वाली ज़ात रब्बे काइनात की है, लिहाज़ा उस क़ादिरे मुत़्लक़ की दा'वत पर रोज़ा रखना चाहिये। (رفیق المناسک ص212 بتغیر)

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले कोई नहीं भरोसा ऐ भाई ! ज़िन्दगी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 178)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जिन का ह़ज क़बूल न हुवा उन पर भी करम हो गया

ह़ज़रते अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ फ़रमाते हैं : मैं ने 50 से ज़ाइद **ह़ज** किये, सिवाए एक के सब का सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ख़ुलफ़ाए अरबआ़ (या'नी चार यार) رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم और अपने वालिदैन को ईसाल किया, अब **एक ह़ज** बाक़ी था (जिस का अभी तक ईसाले सवाब न किया था), मैं ने मैदाने अ़रफ़ात में मौजूद लोगों को देखा और उन की आवाज़ें सुनीं तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** करीम अगर इन लोगों में कोई ऐसा शख़्स है जिस का **ह़ज** मक़्बूल नहीं हुवा तो मैं ने अपने **ह़ज** का उसे **ईसाले सवाब** किया। फिर उस रात जब मैं **मुज़्दलिफ़ा** में सोया तो **अल्लाह** करीम का ख़्वाब में दीदार किया। **अल्लाह** पाक ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया : ऐ अ़ली बिन मुवफ़्फ़िक़ ! क्या तू मुझ पर सख़ावत करता है ? मैं ने **अ़रफ़ात** में मौजूद तमाम अफ़्राद, इन की ता'दाद के बराबर मज़ीद और इन से भी दुगने लोगों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है और इन में से हर फ़र्द की उस के अहले ख़ाना और पड़ोसियों के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा ली है। (روض الریاحین، ص128)

कोई ह़ज का सबब अब बना दे मुझ को का'बे का जल्वा दिखा दे
दीदे अ़रफ़ातो दीदे मिना की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सफ़रे ह़ज के बेहतरीन हम सफ़र

एक शख़्स ने ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की : "मुझे ह़ज का सफ़र दरपेश है, कोई ऐसा हम सफ़र बताइये जिस की सोह़बते बा बरकत का फ़ैज़ लूटते हुए मैं **अल्लाह** पाक की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो सकूं।" फ़रमाया : "ऐ भाई ! अगर तुम **हम नशीन** चाहते हो तो तिलावते कुरआने मुबीन की **हम नशीनी** (या'नी सोह़बत) इख़्तियार करो और अगर साथी चाहते हो तो फ़िरिश्तों को अपना साथी बना लो और अगर **दोस्त** दरकार हो तो **अल्लाह** पाक अपने दोस्तों के दिलों का मालिक है और अगर **तोशा** (या'नी ज़ादे सफ़र) चाहते हो तो **अल्लाह** करीम पर **यक़ीन** सब से बेहतरीन तोशा है और का'बतुल्लाह को अपने सामने तसव्वुर करते हुए ख़ुशी से इस का त़वाफ़ करो।" (بحر الدموع، ص125 ملخصا) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मो'जिज़ा शक़्क़ुल क़मर का है "मदीना" से इयां
"मह" ने शक़ हो कर लिया है "दीन" को आगोश में

शे'र का मत़लब : अपना तख़य्युल पेश करते हुए इस शे'र में शाइ़र ने निहायत उ़म्दा बात कही है, कि बत़ौरे मो'जिज़ा चांद के जो दो टुकड़े हुए हैं उस का लफ़्ज़े "मदीना" से यूं इज़्हार हो रहा है कि "मदीना" का पहला ह़र्फ़ م और आख़िरी ह़र्फ़ ہ मिला दें तो "مہ" या'नी चांद हुवा और "مہ" के दोनों हुरूफ़ م और ہ के बीच में लफ़्ज़े "دین" मौजूद है जिस से लफ़्ज़ "مدینہ"

बन गया ! और यूं गोया मदीना ने ''दीन'' को अपने दामन में लिया हुवा है !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अ़जीब अन्दाज़ में नफ़्स की गिरिफ़्त

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद मुर्तइ़श رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''मैं ने बहुत से **ह़ज** किये और इन में से अक्सर सफ़रे ह़ज किसी क़िस्म का ज़ादे राह लिये बिग़ैर किये। फिर मुझ पर आश्कार (या'नी ज़ाहिर) हुवा कि येह सब तो मेरे नफ़्स का धोका था क्यूं कि एक मरतबा मेरी मां ने मुझे पानी का घड़ा भर कर लाने का हुक्म दिया तो मेरे नफ़्स पर उन का हुक्म गिरां (या'नी बोझ) गुज़रा, चुनान्चे मैं ने समझ लिया कि **सफ़रे ह़ज** में मेरे नफ़्स ने मेरी मुवाफ़क़त फ़क़त अपनी लज़्ज़त के लिये की और मुझे धोके में रखा क्यूं कि अगर मेरा नफ़्स फ़ना हो चुका होता तो आज एक ह़क़्क़े शरई पूरा करना (या'नी मां की इ़ताअ़त करना) इसे (या'नी नफ़्स को) बेह़द दुश्वार क्यूं मह़सूस होता।''

(الرسالۃ القشیریۃ، ص135)

हुब्बे जाह की लज़्ज़त इबादत की मशक़्क़त आसान कर देती है

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم कैसी **मदनी सोच** रखते और किस क़दर आ़जिज़ी के ख़ूगर होते हैं। बा'ज़ों की आ़दत होती है, कि वोह आ़म लोगों से तो झुक झुक कर मिलते और उन के लिये बिछ बिछ जाते हैं मगर वालिदैन, भाई बहनों और बाल बच्चों के साथ उन का रविय्या जारिह़ाना, ग़ैर अख़्लाक़ी और बसा अवक़ात सख़्त दिल आज़ार होता है। क्यूं ? इस लिये कि अ़वाम में उ़म्दा अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा मक़बूलिय्यते आ़म्मा का बाइ़स बनता है जब कि घर में ह़ुस्ने सुलूक करने से इ़ज़्ज़तो शोहरत मिलने की ख़ास उम्मीद नहीं होती ! इस लिये येह लोग अ़वाम में ख़ूब मीठे मीठे बने रहते हैं ! इसी त़रह़ जो

इस्लामी भाई बा'ज़ मुस्तह़ब कामों के लिये बढ़ चढ़ कर कुरबानियां पेश करते मगर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी में कोताहियां बरतते हैं मसलन मां बाप की इत़ाअ़त, बाल बच्चों की शरीअ़त के मुत़ाबिक़ तरबियत और ख़ुद अपने लिये **फ़र्ज़ उ़लूम** के ह़ुसूल में ग़फ़्लत से काम लेते हैं उन के लिये भी इस **ह़िकायत** में इ़ब्रत के निहायत अहम **मदनी फूल** हैं। ह़क़ीक़त येह है कि जिन नेक कामों में "शोहरत मिलती और वाह वाह ! होती है" वोह दुश्वार होने के बा वुजूद ब आसानी सरअन्जाम पा जाते हैं **क्यूं कि ह़ुब्बे जाह** (या'नी शोहरतो इ़ज़्ज़त की चाहत) **के सबब मिलने वाली लज़्ज़त बड़ी से बड़ी मशक़्क़त आसान कर देती है।** याद रखिये ! "ह़ुब्बे जाह" में हलाकत ही हलाकत है। इ़ब्रत के लिये दो **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : (1) **अल्लाह** पाक की त़ाअ़त (या'नी इबादत) को बन्दों की त़रफ़ से की जाने वाली ता'रीफ़ की मह़ब्बत से मिलाने से बचते रहो, कहीं तुम्हारे आ'माल बरबाद न हो जाएं। (فردوس الاخبار، 1/223، حدیث:1567) (2) दो भूके भेड़िये बकरियों के रेवड़ में इतनी तबाही नहीं मचाते जितनी तबाही **ह़ुब्बे मालो जाह** (या'नी मालो दौलत और इ़ज़्ज़तो शोहरत की मह़ब्बत) मुसलमान के **दीन** में मचाती है। (ترمذی، 4/166، حدیث:2383)

ह़ुब्बे जाह के मुतअ़ल्लिक़ अहम तरीन मदनी फूल

"ह़ुब्बे जाह" के तअ़ल्लुक़ से एह़याउल उ़लूम की जिल्द 3 सफ़ह़ा 616 ता 617 को सामने रख कर कुछ **मदनी फूल** पेशे ख़िदमत हैं : "(ह़ुब्बे जाहो रिया) नफ़्स को हलाक करने वाले आख़िरी उमूर और बात़िनी मक्रो फ़रेब से है, इस में उ़लमा, इबादत गुज़ार और आख़िरत की मन्ज़िल त़ै करने वाले लोग मुब्तला किये जाते हैं, इस त़रह़ कि येह ह़ज़रात बसा अवक़ात ख़ूब कोशिशें कर के इबादात बजा लाने, नफ़्सानी ख़्वाहिशात

पर क़ाबू पाने बल्कि शुबुहात से भी ख़ुद को बचाने में काम्याब हो जाते हैं, अपने आ'ज़ा को ज़ाहिरी गुनाहों से भी बचा लेते हैं मगर अ़वाम के सामने अपने नेक कामों, दीनी कारनामों और नेकी की दा'वत आ़म करने के लिये की जाने वाली काविशों जैसे कि मैं ने येह किया, वोह किया, वहां बयान था, यहां बयान है, बयानात (करने या ना'त पढ़ने) के लिये इतनी इतनी तारीख़ें "बुक" हैं, मदनी मश्वरे में रात इतने बज गए और आराम न मिलने की थकन है इसी लिये आवाज़ बैठी हुई है। "मदनी क़ाफ़िले में सफ़र है, इतने इतने मदनी क़ाफ़िलों में या दीनी कामों के लिये फ़ुलां फ़ुलां शहरों, मुल्कों का सफ़र कर चुका हूं वग़ैरा वग़ैरा के इज़्हार के ज़रीए अपने नफ़्स की राह़त के त़लबगार होते हैं, अपना इ़ल्मो अ़मल ज़ाहिर कर के मख़्लूक़ के यहां मक़बूलिय्यत और उन की त़रफ़ से होने वाली अपनी ता'ज़ीमो तौक़ीर, वाह वाह और इ़ज़्ज़त की **लज़्ज़त** ह़ासिल करते हैं, जब मक़्बूलिय्यत व शोहरत मिलने लगती है तो उस का नफ़्स चाहता है कि मेरा इ़ल्मो अ़मल लोगों पर ज़ियादा से ज़ियादा ज़ाहिर होना चाहिये ताकि और भी इ़ज़्ज़त बढ़े लिहाज़ा वोह अपनी नेकियों, इ़ल्मी सलाहिय्यतों के तअ़ल्लुक़ से मख़्लूक़ की इत्तिलाअ़ के मज़ीद रास्ते तलाश करता है और ख़ालिक़े काएनात के जानने पर कि मेरा रब मेरे आ'माल से बा ख़बर है और मुझे अज्र देने वाला है क़नाअ़त नहीं करता बल्कि इस बात पर ख़ुश होता है कि लोग उस की **वाह वाह और ता'रीफ़** करें और ख़ालिक़े काएनात की त़रफ़ से ह़ासिल होने वाली ता'रीफ़ पर क़नाअ़त नहीं करता, **नफ़्स** येह बात ब ख़ूबी जानता है कि लोगों को जब इस बात का इ़ल्म होगा कि फ़ुलां बन्दा नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तारिक है, शुबुहात से बचता है, राहे ख़ुदा में ख़ूब पैसे ख़र्च करता है, इ़बादात में सख़्त मशक़्क़त बर्दाश्त करता है ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े

मुस्त़फ़ा में ख़ूब आहो ज़ारी करता और आंसू बहाता है, दीनी कामों की ख़ूब धूमें मचाता है, लोगों की इस्लाह़ के लिये बहुत दिल जलाता है, ख़ूब मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता कराता है, ज़बान, आंख और पेट का **क़ुफ़्ले मदीना** लगाता है, रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के इतने इतने दर्स देता है, मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान), सदाए मदीना, मदनी दौरा बराए नेकी की दा'वत का बड़ा ही पाबन्द है तो उन (लोगों) की ज़बानों पर उस (बन्दे) की ख़ूब ता'रीफ़ जारी होगी, वोह उसे इ़ज़्ज़तो एह़तिराम की निगाह से देखेंगे, उस की मुलाक़ात और ज़ियारत को अपने लिये बाइ़से सआ़दत और सरमायए आख़िरत समझेंगे, हुसूले बरकत के लिये मकान या दुकान पर "दो क़दम" रखने, चल कर दुआ़ फ़रमा देने, चाय पीने, दा'वते त़आ़म क़बूल करने की निहायत लजाजत के साथ दरख़्वास्तें करेंगे, इस की राय पर चलने में दो जहां की भलाई तसव्वुर करेंगे, उसे जहां देखेंगे ख़िदमत करेंगे और सलाम पेश करेंगे, इस का झूटा खाने पीने की ह़िर्स करेंगे, उस का तोह़फ़ा या उस के हाथ से मस की हुई चीज़ पाने में एक दूसरे पर सबक़त करेंगे, उस की दी हुई चीज़ चूमेंगे, उस के हाथ पाऊं के बोसे लेंगे, एह़तिरामन "ह़ज़रत ! हुज़ूर ! या सय्यिदी !" वग़ैरा अल्क़ाब के साथ ख़ाशिआ़ना अन्दाज़ और आहिस्ता आवाज़ में बात करेंगे, हाथ जोड़ कर सर झुका कर दुआ़ओं की इल्तिजाएं करेंगे, मजालिस में उस की आमद पर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएंगे, उसे अदब की जगह बिठाएंगे, उस के आगे हाथ बांध कर खड़े होंगे, उस से पहले खाना शुरूअ़ नहीं करेंगे, आ़जिज़ाना अन्दाज़ में तोह़फ़े और नज़राने पेश करेंगे। तवाज़ोअ़ करते हुए उस के सामने अपने आप को छोटा (मसलन ख़ादिमो ग़ुलाम) ज़ाहिर करेंगे, ख़रीदो फ़रोख़्त और मुआ़मलात में उस से मुरव्वत बरतेंगे, उस को चीज़ें उ़म्दा क्वॉलिटी की और वोह भी सस्ती या

मुफ़्त देंगे। उस के कामों में उस की इ़ज़्ज़त करते हुए झुक जाएंगे। लोगों के इस त़रह़ के अ़क़ीदत भरे अन्दाज़ से नफ़्स को बहुत ज़ियादा लज़्ज़त ह़ासिल होती है और येह वोह लज़्ज़त है जो तमाम ख़्वाहिशात पर ग़ालिब है, इस त़रह़ की अ़क़ीदत मन्दियों की लज़्ज़तों के सबब गुनाहों का छोड़ना उसे मा'मूली बात मा'लूम होती है क्यूं कि "हुब्बे जाह" के मरीज़ को नफ़्स गुनाह करवाने के बजाए उल्टा समझाता है कि देख गुनाह करेगा तो अ़क़ीदतमन्द आंखें फेर लेंगे ! लिहाज़ा नफ़्स के तअ़ावुन से मो'तक़िदीन में अपना वक़ार बर क़रार रखने के जज़्बे के सबब इ़बादत पर इस्तिक़ामत की शिद्दत उस को नर्मी व आसानी मह़सूस होती है क्यूं कि वोह बात़िनी त़ौर पर लज़्ज़तों की लज़्ज़त और तमाम शह्वतों (या'नी ख़्वाहिशात) से बड़ी शह्वत (या'नी अ़वाम की अ़क़ीदत से ह़ासिल होने वाली लज़्ज़त) का इदराक (या'नी पहचान) कर लेता है, वोह इस ख़ुश फ़हमी में पड़ जाता है कि मेरी ज़िन्दगी **अल्लाह** पाक के लिये और उस की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ गुज़र रही है, ह़ालांकि उस की ज़िन्दगी उस पोशीदा (हुब्बे जाह या'नी अपनी वाह वाह चाहने वाली छुपी) ख़्वाहिश के तह़त गुज़रती है जिस के इदराक (या'नी समझने) से निहायत मज़्बूत़ अ़क़्लें भी आ़जिज़ो बेबस हैं, वोह इ़बादते ख़ुदावन्दी में अपने आप को मुख़्लिस और ख़ुद को **अल्लाह** के मह़ारिम (ह़राम कर्दा मुआ़मलात) से इजतिनाब (या'नी परहेज़) करने वाला समझ बैठता है ! ह़ालांकि ऐसा नहीं, बल्कि वोह तो बन्दों के सामने ज़ेबो ज़ीनत और तसन्नुअ़ (या'नी बनावट) के ज़रीए़ ख़ूब लज़्ज़तें पा रहा है, उसे जो इ़ज़्ज़त व शोहरत मिल रही है इस पर बड़ा ख़ुश है। इस त़रह़ इ़बादतों और नेक कामों का सवाब ज़ाएअ़ हो जाता है और उस का नाम मुनाफ़िक़ों की फ़ेह़रिस्त में लिखा जाता है और वोह नादान येह समझ रहा होता है कि उसे **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब ह़ासिल है।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ؕ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

शरफ़ मुझ को हर साल ह़ज का ख़ुदा दे

शरफ़ मुझ को हर साल ह़ज का ख़ुदा दे मदीना भी हर बार मौला दिखा दे
तू मक्का दिखा दे, मदीना दिखा दे मेरे दिल में मक्का मदीना बसा दे
शरफ़ दीदे का'बा का दे दे इलाही ! मुझे सब्ज़ गुम्बद का जल्वा दिखा दे
मिना के दिल आवेज़ों दिल कश नज़ारे इसी साल मुझ को दिखा या ख़ुदा दे
मैं एह़रामे ह़ज बांध कर आऊं अ़रफ़ात सआ़दत ख़ुदा येह बराए रज़ा दे
इलाही ! तुझे वासित़ा फ़ातिमा का मुह़म्मद के क़दमों में मुझ को क़ज़ा दे
अ़ली फ़ात़िमा का, ह़ुसैनों ह़सन का वसीला बक़ीए़ मुबारक में जा दे
जो हिज्रे मदीना में रोते हैं या रब ! उन्हें भी करम से मदीना दिखा दे
तेरे ख़ौफ़ से तेरे प्यारे के ग़म में जो आंसू बहाए वोह आंख ऐ ख़ुदा दे
तुझे वासित़ा चार यारों का या रब ! दिखा ख़्वाब में जल्वए मुस्त़फ़ा दे
इ़बादत में लग जाए दिल या इलाही ! मेरे दिल से ग़फ़्लत का पर्दा हटा दे
ख़ुदा ! नफ़्स ने है तबाही मचाई मेरी सब बुरी ख़्वाहिशों को मिटा दे
सियह है मेरा सारा आ'माल नामा इलाही ! सियाही तू इस की मिटा दे
मुझे नज़्ओ़ क़ब्रो क़ियामत में मौला तू अम्नो अमां दे तू अपनी रिज़ा दे
तू नूरे मुह़म्मद के सदक़े में या रब ! करम कर मेरी क़ब्र को जगमगा दे
मेरी मग़्फ़िरत कर बराए सह़ाबा जगह ख़ुल्द में अज़ पए औलिया दे
अ़ज़ाबे जहन्नम से ख़ौफ़ आ रहा है मुझे बख़्श, कर दर गुज़र हर ख़त़ा दे
तुझे वासित़ा शाहे कर्बो बला का तू कर दूर **अल्लाह** ! रन्जो बला दे
तू जिस्मानी बीमारियां दूर फ़रमा दे रूह़ानी अमराज़ से भी शिफ़ा दे
मुबारक हो फिर माहे मीलाद आया ऐ भाई ! तू घर और गलियां सजा दे

ख़ुदा ! दे वोह अ़त्तार को सोज़े उल्फ़त
मदीने के ग़म में जो उस को रुला दे

6 रबीउ़ल अव्वल शिफ़. 1441 हि.
04-11-2019

978-969-722-195-0
01082203

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net